पेन्टाट्यूक

पाठ दो

एक सिद्ध संसार

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हजारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैंकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनरी विद्यार्थियों तक अनेक विडिओ अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती है और हमारे अध्यायों के

अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती है, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं के टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों, संस्थानों, व्यापारों और लोगों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1

रूपरेखा 2

प्रेरणा-स्रोत 2

विश्वसनीयता 2

बनावट 3

पृष्ठभूमि 3

उपलब्धता 3

संपर्क 4

उद्देश्य 5

अंधकारपूर्ण बेडौल संसार 8

आदर्श संसार 9

व्यवस्थित करने के छह दिन 9

वास्तविक अर्थ 12

अंधकारपूर्ण बेडौल संसार 12

आदर्श संसार 14

व्यवस्थित करने के छह दिन 16

मिस्र से छुटकारा 16

कनान देश पर अधिकार 17

वर्तमान प्रासंगिगता 19

आरम्भ 20

निरंतरता 22

परिपूर्णता 23

निष्कर्ष 25

पेन्टाट्यूक

पाठ दो

एक सिद्ध संसार

प्रस्तावना

कुछ साल पहले, मैं अपनी कार से कहीं जा रहा था, तभी मैंने एक ट्रेन देखी जो अपनी पटरी से उतर गई थी। पटरी से उतर जाने की वजह से वह अपने स्थान पर ही खड़ी थी और कहीं आ जा नहीं पा रही थी। जब भी कोई ट्रेन अपनी पटरी से जिस पर उसे चलना है उतर जाती है, तो वह वहीं स्थिर हो जाती है, और इससे एक बड़ी समस्या खड़ी हो सकती है।

खैर, आदिकाल में, परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के लिए एक पटरी या मार्ग तैयार किया और उन्हें आज्ञा दी की वे इसका अनुसरण करें। यह मार्ग परमेश्वर की सृष्टि को एक भव्य एवं महिमामय भविष्य की ओर ले जाने के लिए था। लेकिन मानव जाति परमेश्वर द्वारा बनाये गए मार्ग पर चलने में बार-बार असफल रही है। हमने संसार को पटरी पर से उतार दिया है और हम एक बड़ी समस्या में फंस गए हैं।

पाठों की इस श्रृंखला में, हम उस मार्ग के बारे में सीखेंगे जिसकी स्थापना परमेश्वर ने संसार के इतिहास के सबसे शुरुआती दौर में की थी – जिसे मसीही जगत में हम अकसर "सृष्टि की रचना का ईश्वरीय आदेश" भी कहते हैं। इसमें हम उत्पत्ति 1-11 का अध्ययन करेंगे, जिसे कई बार अति प्राचीन इतिहास भी कहा जाता है। बाइबल के ये अध्याय उस अद्भुत मार्ग को देखने में हमारी मदद करते हैं जिसे परमेश्वर ने तैयार किया था और वह चाहता था कि मूसा की अगवाई में इस्राएल के लोग उस पर चलें। और ये अध्याय आज भीहमेवह मार्ग दिखाते हैं जिसका पालन परमेश्वर के लोगों को करना चाहिए।

हमने अपने पहले पाठ की शीर्षक रखा है "एक आदर्श संसार" यहाँ हम अपना ध्यान उत्पत्ति 1:1-2:3 पर केंद्रित करेंगे, अध्याय का यह वह अंश है जहाँ मूसा द्वारा हमें इस बात कर प्रथम वर्णन मिलता है कि कैसे परमेश्वर ने इस संसार की अद्भुत और सुन्दर क्रमानुसार रचना की और जिसे देखकर वह अति प्रसन्न हुआ।

यहाँ हम देखेंगे, कि यह आदर्श संसार उस भविष्य की एक झलक या पूर्वाभास कराता है जिस ओर मूसा के दिनों में परमेश्वर इस्राएल को ले गया था – सम्पूर्ण इतिहास के दौरान परमेश्वर अपने लोगों की अगुवाई इसी मंजिल की ओर करता रहा है। यह न केवल हमें यह दर्शाता है कि आरंभ में चीज़ें कैसे थीं, लेकिन यह भी कि आज हमारे जीवन को कैसा होना चाहिए, और यह भी कि युग के अंत में निश्चित रूप से हमारी दुनिया कैसी होगी।

यह पाठ चार भागों में विभाजित होता है: सबसे पहले, हम उत्पत्ति 1-11 के अति प्राचीन इतिहास की रूपरेखाप्रस्तुत करेंगे। दूसरा, हम उत्पत्ति 1:1-2:3 को ध्यान में रखते हुए बारीकी से इसकी साहित्यिक संरचना का अध्ययन करेंगे। तीसरा, इस भाग कीसंरचना के प्रकाश में हम

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इसके वास्तविक अर्थ का पता लगाएँगे। और चौथे और अंतिम भाग में, हम इस अंश के लिए उचित वर्तमान प्रासंगिगत की खोज करेंगे। आइए उत्पत्ति 1-11 के संपूर्ण अति प्राचीन इतिहास की रूपरेखा के साथ शुरु करते हैं।

रूपरेखा

उत्पत्ति 1-11 के प्रति हमारा दृष्टिकोण पहली नजर में थोड़ा अजीब लग सकता है। इसलिए, हमें अपनी मौल्लिक रणनीति या योजनाको समझाना चाहिए बाइबल के इस भाग का अध्ययन करने मेंकम से कम तीन प्रमुख सिद्धांत हमारा मार्गदर्शन करेंगे : सबसे पहले, इन अध्यायों के पीछे की प्रेरणा का स्रोत; दूसरा, इन अध्यायों के पीछे की साहित्यिक पृष्ठभूमि; और तीसरा, वह उद्देश्य जिसके लिए इन अध्यायों को लिखा गया था।

सबसे पहले, हम लोग उत्पत्ति 1-11 सहित संपूर्ण पवित्र शास्त्र की ईश्वरीय प्रेरणा के प्रति दृढ़ता के साथ प्रतिबद्ध हैं।

प्रेरणा-स्रोत

प्रेरणा-स्रोत के बारे में हमारी पारंपरिक सुसमचारिक सोच उत्पत्ति की पुस्तक के इस भाग के बारे में दो अति महत्वपूर्ण विशेषताओं की याद दिलाती हैं : पहला, इसकी विश्वसनीयता, और दूसरा, इसकी सुविचारित रूप-रेखा या डिज़ाइन।

विश्वसनीयता

हम दृढ़तापूर्वक इस बात की पुष्टि करते हैं कि बाइबल का यह भाग पूरी रीति से विश्वसनीय है क्योंकि यह परमेश्वर द्वारा प्रेरित है। अब, जब हम बाइबल के इस भाग का अध्ययन करते हैं तो इसके अग्रभाग में कई ऐतिहासिक मुद्दे सामने आते हैं, जिनमें में से कुछ मुद्दों का अभी भी पूरी रीति से समाधान नहीं किया गया है। लेकिन हमारे उद्देश्यों को नज़र में रखते हुए यह कहना पर्याप्त होगा कि यहाँ ईश्वरीय प्रेरणा का तात्पर्य ऐतिहासिक विश्वसनीयता है। मूसा का यही उद्देश्य था कि उसके मूल पाठक उत्पत्ति के इस भाग को ऐतिहासिक सत्य के रूप में ग्रहण करें। अब, पवित्र शास्त्र के अन्य भाग की भांति, हमें इन भागो की व्याख्या भी सावधानीपूर्वक करनी है ताकि हम उनके ऐतिहासिक पहलूओं को समझने में गलती कर बैठें। फिर भी, यह स्पष्ट है कि बाइबल के दूसरे लेखक, और यहाँ की तक स्वयं यीशु भी, यह विश्वास करते थे कि उत्पत्ति 1-11 में पाए जानी घटनाएं विश्वसनीय इतिहास था। प्रस्तुत सभी पाठ इसी

विश्वास पर आधारित होंगे कि यह सारी घटनाएं वास्तविक है और प्राचीन समयों में जो कुछ वास्तव में घटित हुआ था उसके भरोसेमंद अभिलेख हैं।

अब जब हम विश्वास करते हैं कि बाइबल का इतिहास भरोसेमंद है, तो हमें यह भी सदैव याद रखना चाहिए कि इन अध्यायों के विषय-वस्तु को चुनने एवं एक उन्हें एक विशेष रूप – रेखा में व्यवस्थित करने के लिए परमेश्वर ने ही मूसा को प्रेरित किया था।

बनावट

इस बारे में इस तरह से सोचें : उत्पत्ति 1-11 हमें सृष्टि की रचना से लेकर अब्राहम के दिनों तक संसार के इतिहास का विवरण देता है, अब्राहम लगभग 2000 से 1800 ईसा पूर्व के बीच जीवित रहा था। अब हम सब इस बात से भी सहमत होंगे कि मूसा ने उन दिनों में घटित बहुत सी वैश्विक घटनाओं को छोड़ दिया, और इन ग्यारह छोटे अध्याओं में कुछ को ही शामिल किया था। इसलिए, उत्पत्ति 1-11 को समझने के लिए हमें मूसा द्वारा किये गए चुनाव के साथ-साथ इन अध्यायों की व्यवस्था एवं क्रम पर भी ध्यान देना चाहिए। जैसा जैसे हम समझेंगे कि मूसा ने कैसे बहुत ही सुविचारित ढंग से, इस अति प्राचीन इतिहास की रूप-रेखा तैयार की, वैसे-वैसेहम कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण सवालों का उत्तर दे पाएँगे। परमेश्वर ने मूसा को क्यों प्रेरित किया की वह इन छोटी-छोटी बारीक जानकारियों को दर्ज करे? और क्यों उन जानकारियों को मूसा से इस तरह से व्यवस्थित कराया जैसा की स्वयं उसी ने किया है?

मूसा ने क्यों ऐसे लिखा था, इस बात को समझने के लिए हमें सबसे पहले उसके दिनों की साहित्यिक परंपराओं की पृष्ठभूमि में झांकना चाहिए।

पृष्ठभूमि

प्राचीन मध्य पूर्व का साहित्य दो कारणों से हमारे उद्देश्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, पहला, क्योंकि अन्य अति प्राचीन अभिलेख मूसा के लिए उपलब्ध थे, और दूसरा, क्योंकि मूसा ने वास्तव में अन्य अति प्राचीन का अध्ययन किया था।

उपलब्धता

पुरातत्व खोज इस बात की पुष्टि करता है कि मूसा सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में लिखने वाला पहला व्यक्ति नहीं था। यह सुनिश्चित है, कि परमेश्वर ने मूसा को प्रेरित किया था, इसलिए उसके द्वारा दिया गया विवरण सत्य है। लेकिनमूसा के द्वारा इन बातों का वर्णन करने के पहले भी मध्य पूर्व में कई राष्ट्रों और समूहों ने इस अति प्राचीन इतिहास के बारे में कईपौराणिक कथाओं एवं महाकाव्यों की रचना कर दी थी।

इनमें से कुछ प्राचीन लेख काफी प्रसिद्ध हैं। कई लोगों ने एनुमा एलिश, या बेबीलोन वाली सृष्टि की कहानी, या गिलगामिश महाकाव्य के “टेबलेट इलेवन”, या बेबीलोन वाली जल

प्रलय की कहानियों के बारे में सुना होगा। मिस्र और कनान में भी अति प्राचीन इतिहास की कहानियों का वृत्तांत पाया जाता है। इनके अलावा भी प्राचीन संसार में बहुत से अन्य दस्तावेज मौजूद है जो सृष्टि की शुरुआत और आरंभिक इतिहास के बारे में बताते हैं।

और न सिर्फ यह, बल्कि इनमें से कई मध्य पूर्व काल में लिखे गए दस्तावेज मूसा की जवानी के दिनों के समय से उसके पास उपलब्ध थे। उसने मिस्र देश के शाही दरबारों म शिक्षा पायी थी, और उसकी रचना और लेख इस बात को दर्शाते हैं कि वह प्राचीन संसार के साहित्य से परिचित था। जब मूसा ने परमेश्वर द्वारा प्रेरित अपने सच्चे प्राचीन इतिहास की रचना की, तब वह प्राचीन मध्य पूर्व के अन्य साहित्यिक परंपराओं से अच्छी तरह से वाकिफ था।

यह जानते हुए कि अन्य अति प्राचीन अभिलेख मूसा के लिए उपलब्ध थे, अब हम अपना दूसरा प्रश्न पूछ सकते हैं : अन्य संस्कृतियों के मिथकों एवं महाकाव्यों के प्रतिमूसा ने कैसी प्रतिक्रिया दी थी?

संपर्क

जैसा कि हम पाठों की इस पूरी श्रृंखला में देखेंगे, मूसा ने नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों रूपों से अन्य अति प्राचीन परंपराओं के प्रति प्रतिक्रिया दी थी।

झूठ का सामना करने के लिए मूसा ने स्वयं प्राचीन काल के सच्चे इतिहास कलिखा। हमें यह भी हमेशा याद रखना चाहिए कि मूसा की अगवाई में चल रहे इस्राएली सभी तरह की सभ्यताओं और मूर्तिपूजक देश के प्रभाव में थे। उनके लिए हमेशा यह डर बना हुआ था कि कहीं वे यह ना मान बैठे की सृष्टि की रचना बहुत से देवी देवताओं के प्रयासों और संघर्षो हुई है। क्योंकि अगर ऐसा होता तो या तो उन्होंने अपने बाप दादाओं के सच्चे विश्वास को त्याग दिया होता, या इस सच्चाई में उन्होंने अन्य देशों की मान्यताओं और धार्मिक विश्वासों को मिला होता। कई मायनों में, मूसा ने सृष्टि की उत्पत्ति का इतिहास लिखा ताकि वास्तव में क्या घटित हुआ था इस बात की शिक्षा परमेश्वर के लोगों को दी जा सके। उसने दूसरे धर्मों के झूठ के खिलाफ़ यहोवावाद के सत्य को स्थापित करने की कोशिश की।

इसके साथ ही, मूसा ने अपने समय की साहित्यिक परंपराओं के विषय में सकारात्मक प्रतिक्रिया देने के द्वारा झूठी कथा कहानियों का खण्डन करने के अपने उद्देश्य को पूरा किया। उसके लेखन मध्य पूर्व के अन्य अभिलेखों से मेल खाते थे, ऐसा उसने इसलिए किया ताकि वह परमेश्वर की सच्चाई को इस ढंग से बता सके जिसे इस्राएली लोग आसानी से समझ सकते थे। हालांकि मूसा के लेख एवं अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों के बीच कई समानताएं हैं, पर हाल के पुरातत्व खोज ने एक विशेष साहित्यिक परंपरा के साथ आश्चर्यजनक समानता की ओर इशारा किया है।

1969 में *एट्राहसिस: द बेबीलोनियन स्टोरी ऑफ द फ्लड शीर्षक के तहत एक* महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ था। अब हम इस बात की पुष्टि नहीं कर सकते की इस लेख की परंपरा

कितनी पुरानी है, लेकिन हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक कहानी के कई टुकडो को जो पहले अलग अलग रूप में जाने जाते थे, एक साथ लेकर आता है।

एट्राहसिस के महाकाव्य का ढांचा त्रिस्तरीय है। यह मनुष्य की सृष्टि से आरम्भ होता है और मानव-इतिहास की आरंभिक अवस्था का भी वर्णन करता है। आदि मानव इतिहास के अंतर्गत मानव जाति की रचना के बाद आरंभिक मानव इतिहास का अभिलेख है जो मानव जाति के कारण संसार के पतन और भ्रष्ट हो जाने पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करता है। और अंततः जल प्रलय के द्वारा न्याय और नए संसार नई व्यवस्था के साथ इस दुष्टता का अंत किया जाता है।

जब हम उत्पत्ति और *एट्राहसिस* के तुलनात्मक अध्ययन करते है तो यह धारणा मजबूत होती है कि मूसा ने योजना के साथ एक व्यापक ढांचे को अपने इतिहास का आधार बनाया। पहली नज़र में उत्पत्ति 1 विभिन्न वर्णनों का एक अव्यवस्थित समूह सा प्रतीत होता है परन्तु *एट्राहसिस* के साथ साहित्यिक तुलना से यह बात सामने आती है कि मूसा लिखित आदिम इतिहास, व्यापक ढांचे पर आधारित एक व्यवस्थित वर्णन है।

उत्पत्ति 1 -11 तीन भागों में विभाजित होता है: पहला, आदर्श सृष्टि जो 1:1-2:3 में पाया जाता है; दूसरा,मानव पाप के कारण संसार का भ्रष्ट होना जो उत्पत्ति 2:4-6:8 में पाया जाता है और अंत में, उत्पत्ति 6:9-11:9 में जल प्रलय और नई व्यवस्था।

अब हम तीसरा प्रश्न पूछ सकते हैं: मूसा ने उत्पत्ति 1-11 क्यों लिखा? वह किस बात को अपने इस्राएली पाठकों कबताने का प्रयास कर रहा था?

उद्देश्य

बुनियादी स्तर पर, हम इस बात पर सुनिश्चित हो सकते हैं कि मूसा इस्राएलियों को अतीत की घटनाओं की सच्चाई बताना चाहता था। वह चाहता था कि वे जान जायें कि उनके परमेश्वर ने विश्व इतिहास के आरंभिक वर्षों में क्या किया था। जिस तरह अन्य देशों की मिथक और पौराणिक कथाओं का उद्देश्य था की लोगों को उनके सत्यता के विषय में यकीन दिलाए, उसी तरह मूसा ने भी इस्राएलियों के विश्वास से जुड़ी ऐतिहासिक सच्चाई को उनके सामने लाने और उन्हें विश्वास दिलाने की कोशिश की।

लेकिन करीब से जाँचने पर, हम मूसा द्वारा लिखित अति प्राचीन इतिहास के पीछे एक अतिरिक्त उद्देश्य को देखने जा रहे हैं। विशेष रूप से, उसने ऐसा इसलिए भी किया ताकि इस्राएल राष्ट्र को परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनने के लिए प्रेरित किया जा सके। अब, यह अतिरिक्त उद्देश्य हर उस व्यक्ति को जो उत्पत्ति 1-11 पढ़ता है सरलता से नज़र नहीं आता है, लेकिन यह तब स्पष्ट हो जाता है जब हम महसूस करते हैं कि अन्य अति प्राचीन लेख भी इसी उद्देश्य का वर्णन करते हैं।

इससे पहले कि हम लोग प्राचीन संसार के प्राचीन लेखों के उद्देश्यों को समझ सकें, हमें यह समझना होगा कि कई मध्य पूर्व की संस्कृतियाँ यह विश्वास करती थी कि इस ब्रह्मांड को अलौकिक स्वर्गीय ज्ञान के अनुसार बनाया एवं आकार दिया गया है। अपनी आदर्श अवस्था में, यह ब्रह्मांड उसी ज्ञान या ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार कार्य करता था। और सम्राट से लेकर दास तक, समाज में प्रत्येक व्यक्ति की यह जिम्मेदारी थी, कि जितना संभव हो सके इस ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार अनुकूल बने।

अब प्राचीन मध्य पूर्व में अति प्राचीन मिथकों और कथाओं के साथ इस बात का क्या संबंध है? इस्राएल के आसपास की संस्कृतियों के पास अति प्राचीन अभिलेख थे जो समय की शुरुआत की घटनाओं के बारे में बताते थे। उन्होंने ऐसा उन संरचनाओं को समझाने के लिए किया, जिन्हें संसार में प्राचीन समयों में देवताओं ने बनाए थे। अति प्राचीन कालों से जुड़ी उनकी परंपराएं केवल आरंभिक विश्व इतिहास से ही संबंध नहीं रखती थीं। अपने वर्तमान धार्मिक एवं सामाजिक प्रणाली को उचित सिद्ध करने हेतु उन्होंने अपने प्राचीन अभिलेखों को लिखा था। इन ग्रंथों के लेखकों ने, जो अकसर पुजारी हुआ करते थे, उन तरीकों की ओर इशारा किया जिनमें देवताओं ने संसार को मूल रूप से व्यवस्थित किया था ताकि यह दिखाया जा सके कि उनके अपने दिनो में चीज़ों को कैसा होना चाहिए। कभी-कभी, वे विशेष रूप से धार्मिक बातों जैसे कि मंदिरों, और पुजारियों, और अनुष्ठानों पर ही ध्यान-केंद्रित करते थे। देवताओं द्वारा किस मंदिर को चुना गया था, और कौन से पुजारी के परिवार को सेवा करनी थी? अन्य समयों पर, वे व्यापक सामाजिक संरचनाओं जैसे राजनीतिक शक्ति और कानून को महत्त्व दिया करते थे,जैसे की राजा किसे बनना है? कुछ लोग गुलाम क्यों हैं?इत्यादि। उनकी कथाओं और मिथकों ने लोगों को देवताओं द्वारा रचित सृष्टि की रीति या नियमों के अनुरूप बनने के लिए प्रेरित किया, अर्थात उन संरचनाओं के अनुरूप जिसे देवताओं ने ब्रह्मांड के लिए निर्धारित किया था

जैसा कि हम इन पाठों में देखेंगे, मूसा ने उत्पत्ति 1-11 को कुछ ऐसे ही कारणों की वजह से लिखा था।,मूसा नेअपने अति प्राचीन इतिहास को परमेश्वर के उन तरीको पर केन्द्रित करते हुए लिखा जिन तरीको से यहोवा ने आरम्भ में संसार को सृजा एवं व्यवस्थित किया था। सृष्टि की रचना से लेकर बाबुल की मीनार तक, मूसा ने वैसे ही लोगों को बताया जैसे अतीत में घटनाएं घटी थीं। फिर भी, उसने ऐसा सिर्फ ऐतिहासिक रुचि के कारण नहीं किया था। जैसे-जैसे मूसा ने मिस्र से प्रतिज्ञा किए हुए देश तक इस्राएलियों की अगवाई की, उसने कई विरोधियों का भी सामना किया जो यह विश्वास करते थे कि उसने वास्तव में इस्राएलियों को गुमराह किया है। और इस विरोध के जवाब में, यह अति प्राचीन इतिहास इस बात की पुष्टि करता था कि इस्राएल के लिए मूसा की नीतियाँ और लक्ष्य उन योजनाओं और रूप-रेखा से मेल खाती थी जिसे संसार के लिए परमेश्वर ने स्थापित किया था। परिणामस्वरूप, मूसा की योजना का विरोध करना परमेश्वर के नियमों और आदेशों का विरोध करने के बराबर था।

उत्पत्ति 1:1-2:3 में आदर्श सृष्टि के अपने लेख में, मूसा ने दिखाया कि कनान देश की ओर जाने के द्वारा इस्राएल वास्तव में परमेश्वर के आदर्शों की ओर बढ़ रहा था। 2:4-6:8 में संसार के पाप में गिरने के विषय में लिखते हुए, मूसा ने दिखाया कि मिस्र भष्टाचार से भरा और कठिनाई का स्थान था, जो पाप के कारण आये परमेश्वर के श्राप के परिणामस्वरूप हुआथा। अंत में, उत्पत्ति 6:9-11:9 में जल प्रलय और उसके परिणामस्वरूप नई व्यवस्था के अपने अभिलेख में, मूसा ने इस्राएलियों को दिखाया कि वह उन्हें कई आशीषों के साथ नई व्यवस्था की ओर ले जा रहा था, ठीक वैसे ही जैसे उससे पहले संसार में नूह के द्वारा नई व्यवस्था और कई आशीषें आईं थी। ये अति प्राचीन तथ्य इस्राएल के भविष्य के लिए मूसा के दर्शन को पूरी रीति से उचित ठहराते थे। यदि वह इस्राएल को इस सत्य के विषय विश्वास दिलापाता है, तो इस्राएल में पाए जाने वाले विश्वासयोग्य लोग मिस्र से फिर जाएँगे और कनान देश को अपनी ईश्वरीय विरासत के रूप में अपना लेंगे।

अब जब हमने उत्पत्ति 1-11 अध्यायों के अति प्राचीन इतिहास के प्रति अपने सामान्य दृष्टिकोण को प्रस्तुत कर दिया है, हम उत्पत्ति की पुस्तक के पहले भाग को बारीकी से देखने की स्थिति में हैं : उत्पत्ति 1:1-2:3 में वर्णित परमेश्वर का आदर्श संसार।

साहित्यिक संरचना – अधिकांश ईवैन्जैलिकल मसीही या सुसमाचारिक जब बाइबल के पहले अध्याय के बारे में सोचते हैं, तो वे उन सभी विवादों के बारे में विचार करते हैं जो इसकी व्याख्या से संबंधित हैं। जैसे क्या परमेश्वर ने छह सामान्य दिनों में सृष्टि की रचना की? उत्पत्ति 1 के "दिन" क्या एक लम्बे युग या समय के बराबर थे? या क्या उत्पत्ति 1 एक काव्य और परमेश्वर की रचनात्मक गैर-ऐतिहासिक गतिविधि का पर्व मात्र है जिसका इतिहास से कोई सम्बन्ध नहीं? ये सभी दृष्टिकोणों बहुत से सुसमाचारिक मसीहों (ईवैन्जलिस्ट) के बीच स्वीकार किया जाता है। हालांकि मेरा अपना मत यह है कि उत्पत्ति 1 सिखाती है कि परमेश्वर ने सृष्टि को छह सामान्य दिनों में ही बनाया था, बाइबल पर विश्वास करने वाले सभी मसीही इस विचार को नहीं मानते हैं।

जब हम इन पाठों में दिए गए उत्पत्ति के इन शुरुआती अध्यायों की ओर बढ़ते हैं, तो हमारी चिंता इनमे पाए जाने वाले ऐतिहासिक मुद्दों के प्रति इतनी नहीं है जितनी इनमे उठने वाले साहित्यिक प्रश्नों के प्रति है। हम इस बात में ज्यादा रुचि रखते हैं कि मूसा ने इस अध्याय को कैसे और क्यों लिखा था। इन पंक्तियों में कौन सी साहित्यिक संरचनाएं दिखाई दे रहीं है? और मूसा के उद्देश्य को समझने में ये संरचनाएं कैसे हमारी मदद करतीं है?

हमें यह ध्यान में रखकर शुरु करना चाहिए कि इस अध्याय के तीन प्रमुख चरण हैं, अर्थात, आरंभ, मध्य, एवं अंत। मूसा द्वारा रचित सृष्टि की कहानी जो उत्पत्ति 1:1-2 में दर्ज है वह इसका आरंभिक चरण है। इन पदों की विषय-वस्तु को हम "अंधकारपूर्ण बेडौल संसार" के रूप में सारांशित कर सकते हैं। इसके बाद अध्याय 1:3-31 जो मध्य चरण को गठित करता है, जिसके अंतर्गत हम "छह दिन में सृष्टि की रचना" या सृष्टि को "व्यवस्थित करने वाले छह

दिन" का विवरण पाते है। आखिर में, अध्याय 2:1-3 जो अंतिम चरण का हिस्सा है जिसमे सब्त के दिन का वर्णन है, या जिसे हम "आदर्श संसार" भी कह सकते हैं।

इस पाठ में,अंधकारपूर्ण बेडौल संसार से शुरु करते हुए हम इसकी संरचना के सभी तीन भागों की जाँच करेंगे। दूसरा, हम इसके अंतिमभाग की जाँच करेंगे जो एक आदर्श संसार से संबंध रखता है। और अंत में, हम उन छह दिनों की जाँच करेंगे जिसमे परमेश्वर ने संसार को व्यवस्थित किया था। आइए पहले उत्पत्ति 1:1-2 के अंधकारपूर्ण बेडौल संसार की ओर देखते हैं।

अंधकारपूर्ण बेडौल संसार

उत्पत्ति 1 के पहले भाग को देखने पर, हमें पृथ्वी पर फैली वाली अव्यवस्था और परमेश्वर की आत्मा के बीच एक बहुत ही प्रभावशाली तनाव को देखते हैं।

पद 1 में शीर्षक देने के द्वारा और पद 2 में संसार की शुरुआती दशा का वर्णन करने के द्वारा, 1:1-2 की आरंभिक पद एक मंच तैयार करती है। अध्याय 1:2 में मूसा ने इसे किस तरह प्रस्तुत किया है, उसे सुनिए :

> पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था (उत्पत्ति 1:2)।

इसपद में हम एक तरह के प्रभावशाली तनाव को महसूस करते है जो इस पूरे अध्याय में बना हुआ है। इस तनाव के एक ओर, पृथ्वी "बेडौल और सुनसान" पड़ी है, या जैसा कि इब्रानी भाषा में कहा गया है, *टोहू वाबोहू* (תֹהוּ וָבֹהוּ)। यह इब्रानी वाक्य बाइबल में बार-बार देखने को नहीं मिलता है इसलिए हमारे लिए इसका सटीक अर्थ मालूम करना मुश्किल है। लेकिन कई विद्वानों का मानना है कि पृथ्वी निवास करने लायक नहीं थी, मानव जीवन के प्रतिकूल थी, बहुत कुछ उन रेगिस्तान या बयाबान के जैसी जिसमे मानव जीवन के पनपने की कोई गुंजाइश नहीं थी। अतः, इस पद की शुरुआत में, हम देखते हैं कि एक निर्जन, अंधकारपूर्ण, आदिमकालीन,अव्यवस्थित गहरे जल ने पूरी पृथ्वी को ढक रखा है।

तनाव में दूसरा तत्व भी है जो 1:2 में दिखाई देता है। मूसा ने लिखा कि "परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।" जो इब्रानी शब्द यहाँ पर इस्तेमाल किया गया वह है *मेरखेफेत* (מְרַחֶפֶת) जिसका अर्थ है "ऊपर उड़ना" या "ऊपर मण्डराना।"

इस तरह हम इस अध्याय की शुरुआत में एक बहुत ही नाटकीय दृश्य को देखते हैं। एक ओर हम पृथ्वी पर अव्यवस्थाको देखते हैं। और दूसरी तरफ उसी अव्यवस्था और बेडौलपन के ऊपर परमेश्वर का आत्मा मंडराता था, परमेश्वर पृथ्वी पर फैली अव्यवस्था और बेडौलपन को दूर करने हेतु कार्यवाही करने के लिए तैयार था। इस प्रारंभिक नाटकीय तनाव ने कई प्रश्नों को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जन्म दिया है : परमेश्वर का आत्मा क्या करेगा? बेडौलपन का क्या होगा? शुरुआती पदों के इस प्रारंभिक नाटकीय तनाव को ध्यान में रख कर, अब हम मूसा द्वारा लिखित अभिलेख के अंतिम भाग में इस तनाव के समाधान के विषय में चर्चा करेंगे : उत्पत्ति 2:1-3 में पाया जाने वाला आदर्श संसार।

आदर्श संसार

इस भाग की संरचना बहुत स्पष्ट एवं सरल है। यह 2:1 में एक सारांश के साथ शुरु होता है कि परमेश्वर ने अपने रचनात्मक कार्य को पूरा कर लिया है, और 2:2-3 में परमेश्वर के विश्राम करने के साथ समाप्त होता है। उत्पत्ति 2:2-3 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं :

> और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया, और उसने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया। और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; (उत्पत्ति 2:2-3)।

जब मूसा ने परमेश्वर को सब्त के दिन विश्राम में प्रवेश करते हुए, उस दिन को विशेष आशीष देते हुए और उसे पवित्र ठहराते हुए वर्णित किया था, तो उसने यह घोषित किया था कि पृथ्वी पर फैली हुई अव्यवस्था और उसके ऊपर मंडरा रही परमेश्वर की आत्मा के बीच उपस्थित तनाव का समाधान हो गया है। परमेश्वर ने अंधकार को अपने आधीन कर लिया था, बेडौल पृथ्वी और गहरे जल के ऊपर अपना प्रभुत्व स्थापित किया था, और अपने बनाये सुव्यवस्थित सुन्दर संसार से वह प्रसन्न था। सष्टि की रचना की कहानी ब्रह्मांड के सिद्ध समन्वय में होने के इस सुखद शांतिपूर्ण दर्शन के साथ समाप्त होती है।

अब जब हमने यह समझ लिया है कि मूसा द्वारा रचित सृष्टि के आरम्भ का वृत्तांत किस तरह से शुरु एवं समाप्त होता है, तो हमें इस अनुच्छेद के मध्य भाग पर भी विचार करना चाहिए जो इस बात का विवरण देता है कि कैसे बेडौल संसार और उसके ऊपर मंडरा रही परमेश्वर की आत्मा के बीच के तनाव का समाधान हुआ था।

व्यवस्थित करने के छह दिन

यह अनुच्छेद सिखाता है कि अपनी छह दिन की अद्भुत योजनाके अनुसार जिसका वर्णन हम उत्पत्ति 1:3-31 में पाते है, परमेश्वर ने पृथ्वी को क्रमबद्ध ढंग से व्यवस्थित किया और संसार में फैली अव्यवस्था को व्यवस्थित किया। इस पंक्तियों का मुख्य केंद्र-बिंदु तब स्पष्ट हो जाता है जब हम देखते हैं कि मूसा ने हर क्रिया के पूरे होने के बाद इस एक वाक्या का का बार-बार उपयोग किया था, “फिर परमेश्वर ने कहा।” ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर इस घटना का प्रमुख किरदार है, और उसका शक्तिशाली वचन इन पदों का केंद्र बिंदु है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर के वचन मात्र ने ही संसार को एक भव्य सुडौल रूप प्रदान किया। अन्य संस्कृतियों के कई पौराणिक देवताओं के विपरीत, इस्राएल के परमेश्वर को सृष्टि की रचना करने के लिए न तो किसी संघर्ष का और न किसी युद्ध का सामना करन पड़ा। उसने सिर्फ बोला, और संसार ने उसके वचन के अनुसार रूप ले लिया। इसके अलावा, परमेश्वर के बोले गए वचनों ने उसकी प्रबलता, बुद्धिमता और ज्ञान को भी प्रदर्शित किया था। परमेश्वर ने संसार को ऐसा व्यवस्थित किया जो उसकी दृष्टि में सबसे उत्तम था।

कई टीकाकारों का मानना है कि परमेश्वर द्वारा सृष्टि को रचने में लगे 6 दिन को तीन-तीन दिन के दो समूहों में बांटा जा सकता है, अर्थात दिन 1 से दिन 3 तक एक समूह और दिन 4 से 6 तक दूसरा समूह। इन दो समूहों के बीच के संबंधों को कई तरीकों से वर्णित किया गया है, और इनमे बहुत से आपसी संबंध भी पाए जाते हैं।

इन प्रतिरूपों से स्वयं को अवगत कराने का एक मददगार तरीका यह है कि उत्पत्ति 1:2 में दिए गए पृथ्वी के विवरण से निष्कर्ष निकाला जाए। आपको याद होगा कि मूसा ने कहा था कि पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी था, *टोहू वाबोहू* (תֹהוּ וָבֹהוּ)। तीन दिनों के दो समूहों के महत्व को समझाने के लिए इन शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है।

एक ओर, पहले तीन दिनों के दौरान, परमेश्वर ने इस तथ्य को सामने रखकर कार्य किया कि पृथ्वी "बेडौल" पड़ी थी। कहने का तात्पर्य है, एक क्षेत्र को दूसरे से अलग करने और अपनी सृष्टि के भीतर अधिकार क्षेत्रों को आकार देने के द्वारा परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को रूप दिया। दूसरी ओर, अंतिम तीन दिनों के दौरान, परमेश्वर ने इस तथ्य के साथ कार्य किया कि बेडौल पृथ्वी "सुनसान" या "खाली" पड़ी थी। उसके लिए परमेश्वर का उपाए यहथा कि उसके द्वारा बनाए गए विभिन्न जीवजंतुओं और अन्य निवासियो द्वारा पृथ्वी के खालीपन को भरा जाये।

पहले तीन दिनों के बारे में सोचें। पहले दिन, परमेश्वर ने दिन को रात से अलग किया था। इससे पहले कि वहां सूर्य होता, परमेश्वर ने अंधकारपूर्ण, बेडौल संसार के अंधेरे में अपने उजियाले को चमकाया था।

दूसरे दिन में, परमेश्वर ने पृथ्वी के ऊपर एक गोल गुंबद, या आकाश को बनाकर उसके नीचे के जल क को और ऊपर के जल को अलग किया था। इस ईश्वरीय कार्य ने हमारे ग्रह के लिए वायुमंडल की रचना की, यानी पृथ्वी पर के जल को ऊपर आकाश के मध्य अंतर पैदा करना।

तीसरे दिन, परमेश्वर ने सूखी भूमि को समुद्र से अलग किया, समुद्र के जल को एक जगह इकठ्ठा किया जिससे सूखी भूमि दिखाई दी।। सूखी भूमि पर वनस्पति बढ़ने लगी। इस तरह पहले तीन दिनों में, परमेश्वर ने बेडौल संसार को रूप दिया। उजियाले को अंधकार से अलग किया, आकाश रूपी अंतर करके ऊपर के जल और नीचे के जल को अलग किया, और पृथ्वी पर शुष्क भूमि को स्थापित किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मूसा के अभिलेख के अनुसार, एक बार जब परमेश्वर ने पहले तीन दिनों के दौरान अधिकार क्षेत्रों को बनाने के द्वारा पृथ्वी के बेडौलपन को एक स्वरुप दे दिया, तो उसने अंतिम तीन दिनों में इन क्षेत्रों में रहने के लिए निवासियों या प्राणियों की सृष्टि की और पृथ्वी के खालीपन को भरा स। चौथे दिन परमेश्वर ने उजियाले और अंधियारे के जगहों को भरने के लिए जिन्हें उसने पहले दिन में बनाया था,आकाश में सूर्य, चंद्रमा, और सितारों को रचा। इन आकाशीय निकायों कदिन और रात पर अलग-अलग प्रभुता करने और प्रकाश देने के लिए आकाश में रखा गया था।

पाँचवें दिन, परमेश्वर ने आकाश में पक्षियों और समुद्रों में समुद्री जीवों को रखा। इन जीवों ने ऊपर आकाश और नीचे समुद्र के जल के क को भर दिया, जिन्हें परमेश्वर ने दूसरे दिन बनाया गया था।

अंत में, छठे दिन परमेश्वर ने सूखी भूमि पर जानवरों और मनुष्य को रखा। इन निवासियों ने सूखी भूमि को भरा जिसे परमेश्वर ने तीसरे दिन समुद्र से बाहर निकाला था। मूसा ने सारी सृष्टि और उनके निवासियों को अपने-अपने स्थान में एकत्र किया। एक शब्द में, परमेश्वर ने अंधकारपूर्ण बेडौल संसार को एक भव्य और उत्कृष्ट रूप दिया और ऐसा करने के लिए उसने देने छह दिनों का उपयोग किया। उसका कार्य इतना अद्‌भुत था कि छह बार परमेश्वर ने कहा :

> "कि अच्छा है" (उत्पत्ति 1:4, 10, 12, 18, 21, 25)

और जब उसने मानव जाति को सूखी भूमि पर रहने के लिए बनाया, तो उसने कहा :

> "कि वह बहुत ही अच्छा है" (उत्पत्ति 1:31)

मूसा ने यह पूरी तरह स्पष्ट कर दिया कि परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था उससे वह अत्याधिक प्रसन्न था। इस तरह हम देखते हैं कि उत्पत्ति 1:1-2:3 मएक बहुत ही सुविचारित, जटिल संरचना है। यह अध्याय संसार के बेडौलपन और उसके ऊपर मंडराती परमेश्वर की आत्मा के साथ शुरु होता है। छह दिनों तक परमेश्वर ने अव्यवस्थित संसार को अपने वचन के द्‌वारा व्यवस्थित किया था। इसके फलस्वरूप, सातवें दिन परमेश्वर अपने द्‌वारा लाई गई आदर्श व्यवस्था से प्रसन्न हुआ, और उसने सब्त के दिन विश्राम का आनंद लिया। अब जबकि हमने उत्पत्ति 1:1-2:3 के बड़े साहित्यिक संरचना का अध्ययन कर लिया है, तो हम यह देखने के लिए तैयार है कि इन पन्क्तियों के वास्तविक या मूल अर्थ को कैसे व्यक्त किया गया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

वास्तविक अर्थ

हमने पहले ही देख लिया है कि बड़े पैमाने पर मूसा के अति प्राचीन इतिहास का उद्देश्य इस्राएल के निर्गमन और विजय को, यह दिखाने के द्वारा सत्यापित करना था, कि इस्राएली लोग उस व्यवस्था के कितने अनुरूप हैं जिसे परमेश्वर ने संसार के शुरुआती दौर में स्थापित किया था। लेकिन उत्पत्ति 1:1-2:3 के विशेष वृत्तांत में इस सामान्य उद्देश्य ने किस तरह से अपने आप को प्रकट किया है? किस तरह मूसा ने इस्राएल के लिए अपनी सेवा को सृष्टि की कहानी के साथ जोड़ा?

एक बार फिर उत्पत्ति 1:1-2:3 के तीन प्रमुख भागों को देखने के द्वारा हम पता लगाएँगे कि मूसा ने ऐसा कैसे किया था। पहले, हम अंधकारपूर्ण बेडौल संसार को देखेंगे। फिर हम आदर्श रूप से व्यवस्थित संसार के आखिरी भाग की ओर मुड़ेंगे। और अंत में, हम इस अध्याय के बीच के भाग को देखेंगे जहाँ परमेश्वर संसार को व्यवस्थित करता है। आइए पहले 1:1-2 को देखें, अंधकारपूर्ण बेडौल संसार।

अंधकारपूर्ण बेडौल संसार

हमारे उद्देश्यों के लिए, उत्पत्ति की पुस्तक के पहले दो पदों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता नाटकीय तनाव है जिसका का उल्लेख पद 2 में दिया गया है। जिस तरीके से मूसा ने अव्यवस्थित संसार और पवित्र आत्मा के बीच नाटकीय तनाव का वर्णन किया है उससे यह स्पष्ट हो गया कि वह न सिर्फ सृष्टि की रचना के बारे में लिख रहा था, परन्तु वह इस्राएल के निर्गमन के बारे में भी लिख रहा था।

एक ओर, आपको याद होगा कि उत्पत्ति 1:2 में मूसा ने पृथ्वी को “बेडौल” या *टोहू के* रूप में वर्णित किया है। दूसरी ओर, उसने परमेश्वर की आत्मा का वर्णन “मण्डराने” या इब्रानी में, *मेरखेफेत के* रूप में किया है। इस दृश्य का महत्व तब स्पष्ट हो जाता है जब हम उन पदों की ओर देखते हैं जिसमें मूसा ने उत्पत्ति के इस नाटकीय तस्वीर की तरफ संकेत दिया है। व्यवस्थाविवरण 32:10-12 में मूसा इस्राएल के निर्गमन और सृष्टि की रचना के बीच के संबंध पर विशेष ध्यान आकृषित करने के लिए उत्पत्ति 1:2 की शब्दावली का प्रयोग करता है। इन पदों में वह क्या कहता उसे सुनें :

> उसने उसको जंगल में, और सुनसान और गरजनेवालों से भरी हुई मरुभूमि में पाया; उसने उसके चारों ओर रहकर उसकी रक्षा की, और अपनी आँख की पुतली के समान उसकी सुधि रखी। जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर ऊपर मण्डलाता है, वैसे ही उसने अपने पंख फैलाकर उसको अपने परों पर उठा लिया। यहोवा अकेला ही उसकी अगुवाई

> करता रहा, और उसके संग कोई पराया देवता न था। (व्यवस्थाविवरण 32:10-12)

ये पद महत्वपूर्ण हैं क्योंकि मूसा के सारे लेखों में सिर्फ यही वह अन्य स्थान है जहाँ पर उसने ने "बेडौल" और "मण्डलाता" शब्दों का उपयोग किया। पद 10 में, जिस शब्द का अनुवाद "मरुभूमि" किया गया है वह इब्रानी शब्द टोहू है जो कि उत्पत्ति 1:2 में "बेडौल" के रूप में दिखाई देता है। इसके साथ, पद 11 में, मेरखेफेत शब्द आया है जिसका अनुवाद "मण्डलाता" के रूप में किया गया है वह है,वही शब्द जिसका उपयोग उत्पत्ति 1:2 में किया गया है जब परमेश्वर का आत्मा गहरे जल के ऊपर "मण्डराता" है। मूसा ने उत्पत्ति 1 के साथ दृढ़ता से इसे जोड़ने के लिए इन दोनों शब्दों को व्यवस्थाविवरण 32 में एक साथ रखा। लेकिन इन शब्दों के उपयोग मात्र से इस संबंध को कैसे बनाया गया था? व्यवस्थाविवरण 32 में "मरुभूमि" और "मंडराता" शब्दों के क्या अर्थ थे? पहले स्थान पर, मूसा ने "मरुभूमि" शब्द को मिस्र के लिए प्रयोग किया था। 32:10 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> उसने उसको जंगल में, और सुनसान और गरजनेवालों से भरी हुई मरुभूमि में पाया; (व्यवस्थाविवरण 32:10)

दूसरे स्थान पर, जब मूसा इस्राएल देश को प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले जा रहा था तो इस्राएल के साथ परमेश्वर की उपस्थिति, संभवतः बादल और आग के खंबे के लिए उसने "मंडराता" शब्द का प्रयोग किया। 32:10-11 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> उसने उसके चारों ओर रहकर उसकी रक्षा की, और अपनी आँख की पुतली के समान उसकी सुधि रखी। जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर ऊपर मण्डलाता है, वैसे ही उसने अपने पंख फैलाकर उसको अपने परों पर उठा लिया। (व्यवस्थाविवरण 32:10-11)

कई मायनों में, हम व्यवस्थाविवरण 32:10-12 को उत्पत्ति 1:2 में अपने स्वयं के कार्य पर मूसा की व्याख्या के रूप में समझ सकते हैं। यह हमें उत्पत्ति के पहले अध्याय को लिखने के पीछे उसके उद्देश्य के प्रति अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। व्यवस्थाविवरण 32 हमारी यह समझने में मदद करता है कि मूसा ने सृष्टि की रचना और मिस्र से इस्राएल के छुटकारे के बीच समानांतर परिस्थिति को देखा। मूसा ने लिखा कि सृष्टि की रचना और मिस्र से इस्राएल के छुटकारे, दोनों में अव्यवस्थित, निर्जन मरुभूमि शामिल थे। उसने यह भी लिखा कि मंडराने के द्वारा परमेश्वर वास्तविक बेडौल संसार में प्रवेश करता है, बहुत कुछ वैसे ही जैसे वह इस्राएल के ऊपर मंडराता है जब उसने उन्हें मिस्र से छुटकारा दिया। सृष्टि की रचना और निर्गमन के बीच इन समानांतरताओं से, हम देख सकते हैं कि मूसा ने अंधकारपूर्ण बेडौल संसार के बारे में सिर्फ इसलिए नहीं लिखा था की इस्राएल को सृष्टि के बारे में बताए; उसने सृष्टि की रचना में

परमेश्वर के कार्य को एक आदिरूप, एक नमूने, या एक रूपावली के रूप में भी पेश किया था, जो बताता था कि उसके दिनों में इस्राएल देश के लिए परमेश्वर क्या कार्य कर रहा था। जब मूसा ने सृष्टि की रचना में परमेश्वर के मूल कार्यो का वर्णन किया, तो उसने अपने पाठकों को यह दिखाने का प्रयास किया कि उनका मिस्र से निकलकर उसके पीछे चलने का निर्णय गलत नहीं है बल्कि, सृष्टि की रचना का लेख यह साबित करता था कि मिस्र से उनका छुटकारा परमेश्वर का एक शक्तिशाली कार्य था। इस्राएल को मिस्र की अव्यवस्था से छुटकारा देने के द्वारा परमेश्वर संसार को फिर से व्यवस्थित कर रहा था, जैसा कि उसने शुरुआत में किया था। परमेश्वर अब इस्राएल के ऊपर मण्डरा रहा था जैसे वह शुरुआत में पृथ्वी के ऊपर मण्डरा रहा था। गलती होने के बजाय, मिस्र से निर्गमन एक ऐसा कार्य था जिसमें परमेश्वर संसार कोअपनी इच्छा के अनुसार व्यवस्थित करने में कार्यरत था। सारांश में, मिस्र से इस्राएल का छुटकारा सृष्टि की पुनः-रचना से कम नहीं था। उत्पत्ति 1 अध्याय की शुरुआत और इस्राएल के निर्गमन वाले अनुभव के बीच समानांतरता को ध्यान में रखकर, जब हम अंतिम भाग को देखते हैं तो हम इस दृष्टिकोण की पुष्टि को देख सकते हैं, अर्थात 2:1-3 में आदर्श रूप से व्यवस्थित संसार।

आदर्श संसार

आपको याद होगा कि सृष्टि की कहानी परमेश्वर के विश्राम में जाने के साथ समाप्त होती है। उत्पत्ति 2:2-3 में विश्राम के लिए इब्रानी शब्द है *शबत* (שָׁבַת), या जैसा कि हम इसे कहते हैं, “सब्त।” और यह शब्दावली एक अन्य तरीके से सृष्टि की कहानी को इस्राएल के निर्गमन से जोड़ती है।

मूसा और इस्राएली लोग *शबत* शब्द का प्रयोग मुख्यतः उन अनुष्ठानों की ओर इशारा करते हुए करते थे जिनका आनंद वे मूसा की व्यवस्था के अनुसार उठाएँगे। वास्तव में, निर्गमन 20 में दस आज्ञाओं के सूचीबद्ध करते हुए, मूसा ने समझाया कि इस्राएल को सब्त का पालन करना है क्योंकि उत्पत्ति 2 में परमेश्वर ने ऐसा करने की आज्ञा दी थी।

> तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना ...क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उनमें हैं, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; (निर्गमन 20:8-11)

जब इस्राएल ने उत्पत्ति की पुस्तक में पढ़ा कि परमेश्वर ने सातवें दिन विश्राम किया, तो वे उत्पत्ति की कहानी को सब्त के अनुष्ठानों और दस आज्ञाओं के साथ जोड़ने से स्वयं को रोक नहीं पाए। हालांकि इस्राएलियों ने जंगल में सब्त का कुछ हद तक पालन किया था, लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि सब्त की आराधना पूर्ण केवल प्रतिज्ञा किए हुए देश में ही हो सकती थी। जैसा कि हम निर्गमन 20:8-11 में पाते हैं, इस्राएलियों को साप्ताहिक सब्त का पालन करना था। लेकिन उन्हें अन्य पवित्र दिनों या सब्तों को भी मानना था। उदाहरण के लिए, लैव्यवस्था

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

25 से हम देखते हैं कि उन्हें भूमि को बिना हल जोते खाली छोड़कर प्रत्येक सातवें वर्ष को भी सब्त वर्ष के रूप में मानना था। इस्राएल को प्रत्येक पचासवें वर्ष को महान जुबली वर्ष करके मानना था जब सभी ऋणों को माफ कर दिया जाता था और सभी परिवारों को अपनी-अपनी भूमि में लौटना था। मूसा की व्यवस्था में, सब्त के पालन में परमेश्वर की पूर्ण आराधना जंगल के बीच घूमते हुए इस्राएलियों द्वारा देखी गई किसी भी अन्य पर्व से कहीं अधिक जटिल थी। क्योंकि सब्त का पूर्ण पालन तभी हो सकता था जब इस्राएली लोग प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करते है, इसलिए मूसा ने इब्रानी शब्दों *नूअख* (נוּחַ) या *मेनूखा* (מְנוּחָה) का प्रयोग करते हुए जो कि *शबत* (सब्त) के साथ निकटता से जुड़े हैं, बार-बार कनान को "विश्राम," या "विश्राम का स्थान" करके संबोधित किया था। कई स्थानों पर, मूसा ने प्रतिज्ञा किए हुए देश को इस्राएल के विश्राम स्थान के रूप में वर्णित किया जहाँ पर इस्राएल राष्ट्र अंततः उस पूर्ण आराधना का पालन करेगा जिसकी आज्ञा परमेश्वर की व्यवस्था में दी गई थी। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 12:10-11 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> परन्तु जब तुम यरदन पार जाकर उस देश में जिसके भागी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें करता है बस जाओ, और वह तुम्हारे चारों ओर के सब शत्रुओं से तुम्हें विश्राम दे, और तुम निडर रहने पाओ, तब जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसी में तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेंटें; और मन्नतों की सब उत्तम उत्तम वस्तुएँ जो तुम यहोवा के लिये संकल्प करोगे, अर्थात् जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूँ उन सभों को वहीं ले जाया करना (व्यवस्थाविवरण 12:10-11)।

इस पदों में हम देखते हैं कि सब्त का पूर्ण पालन – परमेश्वर की आराधना – तभी संभव हो पायेगा जब इस्राएल विश्राम के देश में प्रवेश कर लेगा। मूसा के लिए, सब्त का दिन, व्यक्तियों और परिवारों द्वारा एक दिन शांति और स्थिर होकर आराधना करने से कहीं बड़ कर था। सब्त विश्राम के देश में मूसा के दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण आयाम था, अर्थात उस विशेष स्थान पर आराधना करना एवं उत्सव मनाना जहाँ परमेश्वर अपने नाम को स्थापित करेगा। यही कारण है कि परमेश्वर ने भजन संहिता 95:11 में उन लोगों के बारे में जिन्हें कनान देश में प्रवेश करने से रोका गया था इस तरीके से बोला :

> इस कारण मैंने क्रोध में आकर शपथ खाई कि ये मेरे विश्रामस्थान में कभी प्रवेश न करने पाएँगे। (भजन 95:11)

प्रतिज्ञा किए हुए देश में सब्त और पूर्ण राष्ट्रीय आराधना के बीच यह करीबी संबंध बताता है कि क्यों मूसा ने परमेश्वर के सब्त विश्राम में जाने के साथ सृष्टि की कहानी का अंत किया। मूसा इस्राएलियों को बता रहा था कि जैसे परमेश्वर पृथ्वी को अव्यवस्था से सब्त तक ले गया,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसी तरह वह इस्राएल को मिस्र की अव्यवस्था से प्रतिज्ञा किए हुए देश में सब्त की ओर ले जा रहा था। मूसा इस्राएल को विश्राम के स्थान, यानी कनान देश की ओर ले जा रहा था। और जो लोग मूसा की योजना का विरोध कर रहे थे वे केवल मानवीय योजना का ही विरोध नहीं कर रहे थे। वे वास्तव में परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को आदर्श संसार की तरफ ले जाने वाले उसके प्रयासों का का विरोध कर रहे थे। मिस्र को छोड़ना और प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करना संसार के लिए परमेश्वर की सिद्ध योजना के अनुसार काम करने से कम नहीं था। अब जबकि हम देख चुके हैं कि किस रीति से अव्यवस्थित शुरुआत और सब्त के साथ अंत होने वाली सृष्टि की कहानी ने मूसा के माध्यम सेपरमेश्वर के कार्य के मूल स्वभाव को जो वह इस्राएल के लिए कर रहा था, जो समझाया है, अब हमें उत्पत्ति 1:3-31 में व्यवस्थित करने वाले दिनों के बीच वाले भाग के कुछ तथ्यों पर संक्षेप में देखना चाहिए। मूसा ने सृष्टि की रचना के दिनों को अपनी सेवकाई से कैसे जोड़ा था?

व्यवस्थित करने के छह दिन

सृष्टि के दिनों और इस्राएल के निर्गमन के बीच कई संबंध हैं, लेकिन हम इनमें से सिर्फ दो को ही देखेंगे : पहला, मिस्र से छुटकारे के साथ संबंध, और दूसरा, प्रतिज्ञा किए हुए देश को अपने अधिकार में करने का लक्ष्य।

मिस्र से छुटकारा

सर्वप्रथम, इस्राएल को मिस्र से छुटकारा देने में, परमेश्वर ने उसी तरह की शक्ति का प्रदर्शन किया जैसा उसने उत्पत्ति 1 में सृष्टि को व्यवस्थित करने में दिखाया था। तस्वीर की एक ओर, परमेश्वर ने मिस्रियों पर विपत्तियों को भेजा, और सृष्टि के आरम्भ में अपने ही द्वारा स्थापित व्यवस्था को उलटा कर दिया। उदाहरण के लिए, जैसे शुरुआत में पानी को जीवन से भरपूर होने के लिए सृजा गया था लेकिन इसके बजाय,परमेश्वर ने पानी को खून में बदल दिया था। जिससे मिस्र का पानी घातक बन गया और मछलियाँ मर गई जब जैसा परमेश्वर ने शुरुआत में ठहराया था कि मनुष्यों को जीवित प्राणियों के ऊपर अधिकार रखना था, इसके बजाय, मिस्र के ऊपर मेंढकों, डाँसों, कीड़ों और टिड्डियों का राज हो गया। सृष्टि के समय प्रकाश और अंधकार के विभाजन को पलट दिया गया जब दिन के दौरान ही मिस्र के देश को अंधकार ने ढक लिया था। और भूमि को वनस्पति उपजाने की बजाय, ओलों, आग और टिड्डियों ने मिस्र की सारी फसलों को नष्ट कर दिया। फलदायी होने और पृथ्वी में भर जाने के बजाय, मिस्री जानवर और लोग दोनों ही बहुत संख्या में मर गए। इन और कई अन्य तरीकों में, मिस्र पर आये श्रापों ने उस व्यवस्था को उलट दिया जिसे परमेश्वर ने उत्पत्ति 1 के छह दिनों में स्थापित किया था। विपत्तियों के दौरान, मिस्र देश वास्तव में आदिकाल की अव्यवस्था की ओर लौट गया था। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मूसा ने उसे बेडौल, बंजर मरुभूमि कह कर, इस्राएल से

वह स्थान छोड़ने का आह्‍वान किया था। कोई भी इस्राएली व्यक्ति जो यह विश्वास करता था कि मिस्र में जीवन अच्छा था उसे मूसा की सृष्टि वाली कहानी पर विचार करना होता था। मिस्र में उनका अनुभव उन विचारों से एकदम विपरीत था जैसा मिस्री लोग स्वयं अपने देश के बारे में सोचा करते थे। मिस्री लोग विश्वास करते थे कि वह देश देवताओं द्‍वारा आशीषित था और कुछ हद तक कम से कम कुछ इस्राएली लोग भी इस बात पर विश्वास करते थे। लेकिन मूसा ने स्पष्ट कर दिया कि मिस्र देश परमेश्वर के आदर्श रूप से व्यवस्थित संसार के विपरीत बन गया था। जबकि यहाँ पर मिस्र के साथ यह विरोधाभास एकदम स्पष्ट दिखाई देते है, दूसरी तरफ सृष्टि के छह दिन और मिस्र से छुटकारे के मध्य एक सकारात्मक समानता भी है। जबकि मिस्रियों ने अपने देश को आदिकाल की अव्यवस्था की ओर लौटते देखा, इस्राएलियों ने उन तरीकों से परमेश्वर को अपने पक्ष में संसार को व्यवस्थित करते देखा जो कि सृष्टि के छह दिनों से मेल खाता था। उनका पानी ताजा और जीवन देने वाला बना रहा। उनके स्थानों में मेंढकों और टिड्डियों का राज नहीं था। उन्होंने प्रकाश का आनंद उठाया जबकि मिस्री लोगों को अंधेरे में पीड़ित होना पड़ा। इस्राएलियों के खेत उपजाऊ बने रहे। उनके जानवर सुरक्षित थे, और इस्राएली लोग मिस्र में रहते हुए बहुत बढ़ते गए। और इससे भी अधिक, सृष्टि के ऊपर अपने नियंत्रण के आश्चर्यजनक, अद्‍भुत प्रदर्शन करते हुए, परमेश्वर ने लाल समुद्र को रोक कर रखा और इस्राएलियों के सामने सूखी भूमि को प्रगट किया, ठीक वैसे ही जैसे सृष्टि के तीसरे दिन वह प्रगट हुई थी। इस्राएल की ओर से परमेश्वर द्‍वारा किए गए प्राकृतिक आश्चर्यक्रम अनोखे या नए नहीं थे। परमेश्वर के यह कार्य कई तरह से, उन कार्यो की याद दिलाते थे जिसे परमेश्वर ने उत्पत्ति 1 के दिनों में संसार को व्यवस्थित करते हुए किया था। उत्पत्ति 1 में जिस तरीके से परमेश्वर ने पृथ्वी को व्यवस्थित किया था और जिस तरीके से उसने इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाया था, इनके बीच समानताओं ने मूसा के पाठकों को दिखाया कि उनकी ओर से किया गया परमेश्वर का कार्य, सृष्टि के उसके कार्य के समानांतर था। मिस्र से उनके निर्गमन में होकर, परमेश्वर ने संसार को फिर से आकार दिया जैसा कि उसने शुरुआत में किया था। मिस्र से छुटकारा न केवल सृष्टि के दिनों की याद दिलाता था, बल्कि शुरुआत में जिस व्यवस्था को परमेश्वर ने स्थापित किया था वह उसी तरीके से कनान देश में जीवन की अपेक्षा करता था।

कनान देश पर अधिकार

जब इस्राएल प्रतिज्ञा किए हुए देश में पहुँचेगा, तो प्रकृति उपजाऊपन और आनंद के साथ उचित रीति से व्यवस्थित की जायेगी। इसी कारण से, परमेश्वर ने कनान को दूध और शहद की धाराओं वाला देश कहा था। इसके अलाव, प्रतिज्ञा किए हुए देश में, इस्राएली लोग परमेश्वर के उसी स्वरूप को धारण करेंगे जैसा कि उसे छठवें दिन में स्थापित किया गया था। विशेष रूप से ध्यान दें कि उत्पत्ति 1:28 में, परमेश्वर ने मानव जाति से कहा :

> "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।" (उत्पत्ति 1:28)

हालांकि इस्राएल ने मिस्र में भी, इस आशीष का कुछ अनुभव किया था, परन्तु यह कनान देश ही था जहाँ पर परमेश्वर इस्राएल को और अधिक मात्रा मेंप्रतिष्ठित करेगा। मूसा के नेतृत्व में, इस्राएली लोग उस स्थान की ओर अग्रसर थे जहाँ सृष्टि में वे इस आदर्श पदवी को प्राप्त करने में सफल होंगे। उस बात को लैव्यवस्था 26:9 में सुनिए जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी कि इस्राएल के देश में विश्वासयोग्य इस्राएलियों के साथ क्या होगा :

> और मैं तुम्हारी ओर कृपा दृष्टि रखूँगा और तुम को फलवन्त करूँगा और बढ़ाऊँगा, और तुम्हारे संग अपनी वाचा को पूर्ण करूँगा। (लैव्यवस्था 26:9)

यहाँ पर उत्पत्ति 1:28 की ओर एकदम साफ संकेत है। परमेश्वर ने उत्पत्ति 1:28 में कहा था, "फूलो फलो और पृथ्वी में भर जाओ।" लैव्यवस्था 26:9 में वह कहता है कि वह उन्हें फलवन्त करेगा और देश में उनकी संख्या को बढ़ायेगा। कनान देश उस अद्भुत संसार के समान होगा जिसे परमेश्वर ने शुरुआत में व्यवस्थित किया था। कनान स्वाभाविक सद्भाव का स्थान होगा जहाँ पर परमेश्वर का स्वरूप इस पृथ्वी पर अपनी वास्तविक भूमिका को पूरा करने में सक्षम होगा। हमने उन कुछ ही तरीकों को देखा है जिनमें सृष्टि के छह दिन मूसा के दिनों में इस्राएल के अनुभव से जुड़ते हैं। लेकिन इस नमूने से हम देखते हैं कि परमेश्वर ने जिस तरीके से ब्रह्मांड को व्यवस्थित किया, उस विषय में मूसा का यह अभिलेख सिर्फ एक लेख नहीं था। वह केवल इतिहास की कहानी नहीं था उसने सृष्टि के छह दिनों का वर्णन उन तरीकों से किया जो उसके इस्राएली पाठकों को अपने जीवनों जो घटित हो रही बातों को स्पष्ट रूप से देखने में मदद मिले। जिस तरह परमेश्वर प्रकृति को विशेष तरीकों से व्यवस्थित कर ब्रह्मांड को अव्यवस्था से सब्त की ओर ले गया, उसी तरह इस्राएलियों के लिए संसार को फिर से व्यवस्थित करने के द्वारा परमेश्वर इस्राएल को मिस्र की अव्यवस्था से कनान में सब्त विश्राम की ओर ले जा रहा था। जब इस्राएलियों ने मूसा को ब्रह्मांड की सृष्टि के बारे में बताते हुए सुना तो हम केवल इस्राएलियों की प्रतिक्रिया की कल्पना कर सकते हैं। उन्होंने एहसास किया होगा कि जो कुछ उनके साथ हो रहा था वह कोई दुर्घटना नहीं थी। उन्हें मिस्र से छुटकारा देने और कनान देश ले जाने के द्वारा, परमेश्वर संसार में कार्य कर रहा था जैसे उसने शुरुआत में ब्रह्मांड को आदर्श व्यवस्था में लाने के लिए किया था। इस्राएल का छुटकारा एक पुनः-सृष्टि थी, और उन्हें उस पुनः-सृष्टि के बड़े और बड़े अनुभवों में मूसा के पीछे चलना था। अब जबकि हमने उत्पत्ति 1:1-2:3 के वास्तविक अर्थ को देख लिया है, हमें अपने अंतिम विषय की ओर जाना चाहिए, यानी सृष्टि की कहानी का आधुनिक अनुप्रयोग। इस अनुच्छेद को लागू करने में, हम उन तरीकों

का ध्यान से पालन करेंगे जिनमें नए नियम ने इस अनुच्छेद के विषयों को विस्तार से समझाय गया है।

वर्तमान प्रासंगिगता

नए नियम के लेखक, परमेश्वर द्वारा संसार की सृष्टि के बारे में उन्हें बताने के लिए उत्पत्ति 1 पर बहुत ज्यादा निर्भर थे। उन्होंने हर वह संकेत दिया कि वे मूसा की कहानी की विश्वसनीयता पर विश्वास करते थे। फिर भी, यह तथ्य चाहे जितना भी महत्वपूर्ण हो, नए नियम के लेखकों ने इस तथ्य के साथ-साथ मूसा के प्रमुख उद्देश्य को भी विस्तार से समझाया है जैसा कि हमने इस पाठ में यहाँ पर रेखांकित किया है। जिस तरह से मूसा ने मिस्र से इस्राएल के छुटकारे को सृष्टि के प्रारूप के समान देखा, उसी तरह से नया नियम उत्पत्ति 1:1-2:3 को इससे भी बड़े छुटकारे के प्रारूप के समान देखता है – वह छुटकारा जो मसीह में मिलता है। नया नियम सिखाता है कि छुटकारे और न्याय के सभी अनुभव जिन्हें इस्राएल ने पुराने नियम के दिनों में देखा था वे उस महान और अंतिम दिन का पूर्वानुमान करते थे जब परमेश्वर अपने पुत्र के द्वारा छुटकारा और न्याय लेकर आयेगा। इसी विश्वास के कारण नये-नियम के लेखकों ने मूसा-रचित सृष्टि के वर्णन को आधार बनाकर यीशु मसीह को मुख्य केंद्र बनाया। जिस प्रकार से इस्राएल अपने निर्गमन को सृष्टि की रचना के सन्दर्भ में देखता है उसी प्रकार नये-नियम के लेख़क यीशु मसीह को सृष्टि की ज्योति के रूप में देखते हैं। जब कभी भी हम मसीह के छुटकारे के कार्य पर नए नियम की शिक्षा की खोज करते हैं, तो हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि नए नियम के लेखक मानते थे कि मसीह के द्वारा संसार का छुटकारा एक ही समय में या एक बार में नहीं आया था। इसके विपरीत, वे विश्वास करते थे कि मसीह नेसंसार के लिए छुटकारा और न्याय अपने राज्य के तीन चरणों में लेकर आया जो आपस में जुड़े थे। पहले स्थान पर, जब मसीह पहली बार पृथ्वी पर आया तो उसने अपने लोगों के उद्धार के लिए बहुत से काम पूरे किये थे। मसीह के पहले आगमन की इस अवधि को हम लोग, राज्य का उद्घाटन कह सकते हैं। नया नियम मसीह के जीवन, उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान, और स्वर्गारोहण, साथ में पिन्तेकुस्त और प्रेरितों की बुनियादी सेवकाई को मसीह के महान छुटकारे की शुरुआत के रूप में देखता है। दूसरे चरण में, नए नियम के लेखक समझ गए थे कि मसीह के द्वारा संसार को छोड़ देने के बाद भी उसका राज्य अब भी निरंतर जारी। इस समय के दौरान, सुसमाचार के प्रचार करने के द्वारा परमेश्वर का उद्धार देने वाला अनुग्रह पूरे संसार में फैल रहा है। प्रेरितों के बाद और मसीह की वापसी तक के संपूर्ण इतिहास में मसीह में उद्धार की निरंतरता शामिल है। तीसरे स्थान पर, नया नियम सिखाता है कि राज्य की सम्पूर्णता के समय जब मसीह महिमा में वापस आयेगा, तो उद्धार भी अपनी पूरी सम्पूर्णता में हो कर आयेगा। हम लोग पाप के ऊपर उसके

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विजय को देखेंगे, मसीह में जो सोए हैं वे जी उठेंगे, और हम उसके साथ संसार पर राज करेंगे। मसीह के पहले आगमन के समय उद्धार शुरु हुआ और आज भी जारी है, और जब वह परिपूर्णता में वापस आयेगा तो काम पूरा होगा। मसीह के राज्य के ये तीन चरण उन तरीकों को समझने के लिए बहुत जरूरी हैं जिनमें नए नियम के लेखकों ने मूसा की सृष्टि की कहानी को विस्तार से समझाया, इसलिए हमें प्रत्येक को अलग-अलग करके देखना चाहिए। मूसा द्वारा इस्राएल को लिखने के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, नए नियम के लेखकों ने उत्पत्ति की सृष्टि की कहानी को मसीह के राज्य के उद्घाटन, निरंतरता, और परिपूर्णता में मसीह के उद्धार पर लागू किया। आइए सबसे पहले उन तरीकों की ओर देखते हैं जिनमें नया नियम उत्पत्ति के पहले अध्याय को राज्य के उद्घाटन से जोड़ता है।

आरम्भ

नया-नियम किस प्रकार से सृष्टि की रचना को मसीह के राज्य के आरम्भ को देखने हेतु उपयुक्त चश्मे के रूप में प्रयोग करता है? क्योंकि बहुत से वचनों में नया-नियम यीशु के प्रथम आगमन को परमेश्वर द्वारा सृष्टि के पुनर्निर्माण और ब्रम्हांड की पुनर्व्यवस्था के रूप में दिखाता है सबसे पहले यूहन्ना रचित सुसमाचार के शुरुआती शब्दों पर विचार करें। यूहन्ना 1:1-3 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। (यूहन्ना 1:1-3)

ध्यान दें कि यूहन्ना का सुसमाचार कैसे शुरु होता है, "आदि में।" हम सभी जानते हैं कि ये शब्द उत्पत्ति 1:1 के शुरुआती शब्दों से निकल कर आते हैं जहाँ मूसा ने लिखा :

> आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। (उत्पत्ति 1:1)

शुरुआत से ही, यूहन्ना अपने पाठकों को उत्पत्ति में पाए जाने वाली सृष्टि की कहानी के ढाँचे अंतर्गत रखता है। फिर यूहन्ना आगे कहता है कि मसीह त्र्येक परमेश्वर का एक रूप या व्यक्ति है जिसने सब वस्तुओं की रचना की; वह परमेश्वर का वचन है, जो सृष्टि के समय बोला गया था, जिसके द्वारा संसार को पहली बार रचा गया था। हालांकि ये पद सृष्टि की कहानी के स्पष्ट संदर्भ के साथ शुरु होते हैं, लेकिन जैसे-जैसे हम यूहन्ना 1 में आगे पढ़ना जारी रखते हैं, हम पाते हैं कि यूहन्ना योजनाबद्ध तरीके से उत्पत्ति से हटकर घटनाओं के उनदूसरे समूह की ओर जाता है जो सृष्टि की कहानी के समानांतर थी। अगले पदों यानी यूहन्ना 1:4-5 में जो उसने लिखा उसे सुनिए :

> उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया। (यूहन्ना 1:4-5)

इस बिंदु पर यूहन्ना उत्पत्ति के विषयों पर निष्कर्षों को निकालना जारी रखता है, विशेषकर प्रकाश के विषय को जिसको परमेश्वर ने अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार में पहले दिन स्थापित किया था। फिर भी, यीशु को उत्पत्ति के प्रकाश मात्र के रूप में दर्शाने के बजाय, यूहन्ना ने मसीह के देहधारण को एक ऐसे प्काश के रूप में इंगित किया जोसंसार मेंपाप के कारण आये अन्धकार में मध्य चमकता है। सृष्टि से ध्यान हटाकर मसीह के आगमन पर जाने के द्वारा, यूहन्ना ने उजागर किया था कि मसीह में संसार के पापमय अंधकार के विरूद्ध चमकने के द्वारा, परमेश्वर संसार की अव्यवस्था के विरूद्ध में काम किया, ठीक वैसे ही जैसे उसने शुरुआत में किया था। कुछ ऐसा ही विषय 2 कुरिन्थियों 4:6 में दिखाई देता है। वहाँ पौलुस ने अपनी सेवकाई की महिमा की कुछ इस रीति से व्याख्या की है :

> इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, "अन्धकार में से ज्योति चमके," और वही हमारे हृदयों में चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो। (2 कुरिन्थियों 4:6)

यहाँ पर पौलुस के शब्द प्रत्यक्ष रूप से उत्पत्ति 1 की ओर इशारा कर रहे है, "परमेश्वर... कहा 'अंधकार में से ज्योति चमके।'" उसने अपने शब्दों में ज्योति को प्रकट करने के द्वारा सृष्टि के मूल क्रम पर ध्यान आकृषित किया, लेकिन फिर वह सृष्टि की कहानी के महत्वपूर्ण समानांतर पर ध्यान आकृषित करता है – परमेश्वर ने "अपनी ज्योति हमारे हृदयों में चमकाई है" जब "परमेश्वर की महिमा" "यीशु मसीह के चेहरे" में दिखाई दी थी। प्रेरित ने कहा कि मसीह के राज्य का उद्घाटन – यानी वह समय जब मसीह का चेहरा पृथ्वी पर दिखाई दिया जा सकता था – को सबसे अच्छी तरीके से तब समझा गया जब इसे परमेश्वर के मूल सृजनात्मक कार्य के आदिरूप से संबंधित किया गया था। शुरुआत में ज्योति के प्रकट होने में जिस महिमा को परमेश्वर ने दिखाया था वही महिमा अंधकार के संसार में मसीह के पहले आगमन के समय भी उजागर की गई थी। इन दोनों अनुच्छेदों से हम मूसा की सृष्टि की कहानी के मसीही दृष्टिकोण में एक आवश्यक तथ्य को पाते हैं। मसीह के अनुयायी, मसीह के पहले आगमन, यानी राज्य के उद्घाटन के दौरान परमेश्वर द्वारा किये गए कार्यों की एक तस्वीर और पूर्वानुमान उत्पत्ति 1 देख सकते है।

कई मायनों में, आप और मैं भी उन्हीं तरह की परीक्षाओं का सामना करते हैं जिनका कि मूसा के पीछे चलने वाले इस्राएलियों ने किया था। जैसे अद्भुत कार्य परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से छुड़ाते वक़्त किया था वैसा ही अद्भुत कार्य उसने मसीह में किया था जब वहपहली बार इस संसार में आया। फिर भी, हम 2000 साल पहले मसीह में परमेश्वर द्वारा किये महानकार्य को अकसर समझने में असफल हो जाते ह। एक अनभिज्ञ मनुष्य के दृष्टिकोण से देखें तो,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मसीह का जीवन बहुत महत्वपूर्ण नहीं लगता। इसको बड़े आसानी से यह सोच कर नजरंदाज किया जा सकता है कि यह भी उस समय में घटित हुई कई महत्वहीन घटनाओं में से एक है। जब हम मसीह के बारे में इस प्रकार से सोचने की परीक्षा में पड़ते हैं, तो हमें नए नियम के दृष्टिकोण को याद करना चाहिए। पृथ्वी पर मसीह का आना परमेश्वर द्वारा अंतिम बार इस संसार को पुनः-व्यवस्थित करने की शुरुआत थी। परमेश्वर संसार को पाप और मृत्यु के अव्यवस्थित अंधकार से छुटकारा दे रहा था। यीशु का पहला आगमन उस प्रक्रिया को शुरु करता है जिसमें परमेश्वर अपनी सृष्टि को अपने और अपने स्वरूप के लिए सदा महिमा में वास करने हेतु अद्भुत, अनंत काल तक जीवन देने वाला स्थान बनाएगा। हमनेमसीह पर, और केवल उसी पर अपना विश्वास बनाये रखने के द्वारा एकदम सही कदम उठाया हैं। अभी तक, हमने देखा कि मसीह के पहले आगमन के महत्व को समझाने के लिए नया नियम सृष्टि की कहानी का उपयोग करता है। अब हम देख सकते हैं कि नया नियम राज्य की निरंतरता को, यानी मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच की अवधि को भी पुनः-सृष्टि के रूप में मानता है।

निरंतरता

2 कुरिन्थियों 5:17 एक ऐसा प्रसिद्ध पद है जो इस दृष्टिकोण को समझाता है :

> इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं। (2 कुरिन्थियों 5:17)

किंग जेम्स संस्करण इस पद का यह कहते हुए अनुवाद करता है कि जब कोई व्यक्ति मसीह में होता है, तो वह "नया प्राणी" बन जाता है। यह अनुवाद दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि यह उत्पत्ति 1 की सृष्टि की कहानी के लिए पौलुस के इशारे को व्यक्त करने में असफल साबित होती है। यहाँ यूनानी शब्द *क्टीसिस* (*κτίσις*), जिसका सही अनुवाद "सृष्टि" है (जैसा कि ज्यादातर आधुनिक अनुवादों में है), न कि "प्राणी।" वास्तव में, अनुच्छेद के इस भाग का मूल रूप से ऐसे अनुवादकिया जा सकता है, "एक नई सृष्टि है।" पौलुस का तात्पर्य ऐसा प्रतीत होता है कि जब लोग बचाये जाने वाले विश्वास के साथ मसीह के पास आते हैं, तो वे एक नए राज्य, एक नए संसार, एक नई सृष्टि का हिस्सा बन जाते हैं। इस धारणा के प्रकाश में हम देखते हैं कि राज्य की निरंतरता के दौरान जब पुरुष एवं महिलाएं मसीह पर अपना विश्वास लाते हैं तो वे नई सृष्टि का अनुभव करते हैं। इस अर्थ में, सृष्टि की उत्पत्ति की कहानी एक जरिया बनती है वह सब कुछ सही रीति से समझने के लिए,जो मसीह को सुनने वाले, विश्वास लाने वाले और उसका अनुसरण करने वाले लोगों के साथ होता है। जब हम परमेश्वर की नई सृष्टि का हिस्सा बनते हैं, तो हम संसार के लिए परमेश्वर की विस्मित कर देने वाली आदर्श व्यवस्था का आनंद लेना शुरु कर देते हैं। इस कारण, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि पौलुस, व्यक्ति के उद्धार

की प्रक्रिया को दूसरे तरीके से भी समझाता है जो कि मूसा की सृष्टि की कहानी से निकलता है। कुलुस्सियों 3:9-10 में हम इस वचनों को पढ़ते हैं :

> क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है, जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है। (कुलुस्सियों 3:9-10)।

इस अनुच्छेद में, प्रेरित ने समझाया है कि उत्पत्ति 1 के संदर्भ में मसीह के अनुयायियों के साथ क्या घटित होता है। हम लोग “[अपने] सृजनहार के स्वरूप में... नए बनते जाते हैं।” बेशक, पौलुस ने उत्पत्ति 1:27 की ओर इशारा किया है जहाँ मूसा ने कहा था कि परमेश्वर के आदर्श संसार में आदम और हव्वा शामिल थे जो “परमेश्वर के स्वरूप में” सृजे गए थे। मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान, हम पाते हैं कि हम लोग परमेश्वर के स्वरूप के समान अपने पहले माता-पिता की दशा को वापस पाने की आजीवन प्रक्रिया में लगातार “नए बनाए” जा रहे हैं। ये दो अनुच्छेद दिखाते हैं कि मसीह के कार्य को समझने के लिए नया नियम मूसा के वृत्तांत को एक मानक के रूप में इस्तेमाल करता है। ऐसा उसने न केवल राज्य केउद्घाटन में, बल्कि इसकी निरंतरता में भी किया है, इसमें कोई संदेह नहीं कि, नए नियम के लेखक मूसा की सृष्टि की कहानी में पाए विषयों को एक अंतिम चरण में ले जाते हैं। न सिर्फ उन्होंने मसीह के पहले आगमन को एक नई सृष्टि की शुरुआत के रूप में देखा, और राज्य की निरंतरता को ऐसे समय के रूप में जब व्यक्ति अपने जीवन में नई सृष्टि के प्रभावों का आनंद लेता है, लेकिन उन्होंने सृष्टि के विषयों को मसीह के कार्य के अंतिम चरणों पर भी लागू किया – यानी राज्य की परिपूर्णता पर।

परिपूर्णता

नए नियम में कम से कम दो अनुच्छेद इस संबंध में स्पष्ट नज़र आते हैं। पहला, इब्रानियों 4 जो मूसा की सृष्टि की कहानी के संदर्भ में मसीह की वापसी की ओर इशारा करता है :

> क्योंकि सातवें दिन के विषय में उसने कहीं यों कहा है, “परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कामों को निपटा करके विश्राम किया।”... अत: जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिये सब्त का विश्राम बाकी है; क्योंकि जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उसने भी परमेश्वर के समान अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया है। अत: हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ... (इब्रानियों 4:4-11)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जिस तरह मूसा ने उत्पत्ति 2 में परमेश्वर के सब्त के दिन का उपयोग इस्राएल को कनान देश, यानी विश्राम के देशजानेके लिए प्रेरित करने हेतु किया था, उसी तरह इब्रानियों के लेखक ने परमेश्वर के सब्त के दिन को अंतिम छुटकारे के आदर्श नमूने के समान देखा जिसका अनुभव हम तब करेंगे जब मसीह वापस आयेगा। जिस तरह से परमेश्वर ने शुरुआत में संसार को आदर्श रूप से व्यवस्थित किया और सब्त के आनंद को लेकर आया था, उसी तरह जब मसीह महिमा में वापस आयेगा, तो वह संसार को पुनः-व्यवस्थित करेगा और अपने लोगों को अंतिम सब्त के विश्राम का आनंद देगा। और जब हम उस दिन की बाट जोहते हैं, तो हम से कहा गया है कि हमें "उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करते रहना" चाहिए, जो मसीह के लौटने पर आएगा। अंत में, प्रकाशितवाक्य 21:1 ऐसा सबसे शानदार पद है जो मूसा की सृष्टि की कहानी के संदर्भ में मसीह के दूसरे आगमन की पहचान करता है। यूहन्ना ने जिस तरीके से सृष्टि से सम्बंधित विषयों को मसीह की वापसी पर लागू किया उसे सुनें :

> फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। (प्रकाशितवाक्य 21:1)

यूहन्ना ने "एक नए आकाश और एक नई पृथ्वी" की बात की, और यह वाक्यांश उत्पत्ति 1:1 को याद दिलाता है जिसमें लिखा गया है कि परमेश्वर ने "आकाश और पृथ्वी" की सृष्टि की। इसके अलावा, यूहन्ना ने कहा कि इस नई पृथ्वी पर अब "समुद्र भी न रहा।" आपको याद होगा कि उत्पत्ति 1:9 में परमेश्वर ने समुद्र को रोका था, उसे उसकी सीमा में रखा ताकि सूखी भूमि दिखाई दे सके और मानव जाति के लिए एक सुरक्षित आवास बन सके। नए संसार में, मसीह की वापसी के बाद, हम पाएँगे कि नमक वाले समुद्रों को पूरी तरह से पृथ्वी पर से हटा दिया जाएगा और इसे ताजे जीवन देने वाले जल के साथ प्रतिस्थापित कर दिया जाएगा। मसीह का कार्य उत्पत्ति 1 में सृष्टि के दिनों के समान है, लेकिन मसीह में परमेश्वर और आगे बढ़कर कार्य करेगा, इतने प्रभावशाली ढंग से जिससे की वह आदर्श व्यवस्था की अपनी योजना को पूर्ण कर सके। संपूर्ण ब्रह्मांड को नए आकाश और नई पृथ्वी के रूप में पुनः-सृजा जायेगा, और परमेश्वर एवं उसके लोग उस नए संसार का एक साथ आनंद लेंगे।

दुर्भाग्यवश, मसीही लोग अकसर अपनी अनंत आशा को सृष्टि से अलग करते हैं। हम सोचते हैं कि हम अपने अनंत जीवन को स्वर्ग पर एक आत्मिक संसार में बिताएँगे। लेकिन नया नियम इस बारे में एकदम स्पष्ट है। हमारी अंतिम मंजिल सृष्टि के सातवें दिन ठहराए गए सब्त के लिए लौटना है। हम लोग अनंत काल को नए आकाश और नई पृथ्वी पर बिताएँगे। मूसा के दिनों में यही आशा इस्राएलियों की थी, और आज हमारी आशा भी यही है। जब हम नए नियम के मार्गदर्शन का पालन करते हैं, तो हमें उत्पत्ति के शुरुआती अध्याय को सिर्फ आरंभिक दिनों में घटने वाली घटना के लेख के रूप में नहीं पर उससे बढ़कर मानना चाहिए। यह वह तस्वीर भी है जिसमें जो कुछ परमेश्वर ने मसीह के पहले आगमन के समय किया था, जो कुछ वह दिन ब

दिन अभी हमारे जीवनों में कर रहा है, और जो परिपूर्णता वह मसीह के द्वितीय आगमन के साथ लेकर आने को है।

मसीह के राज्य के तीनों चरणों में, परमेश्वर इससंसार और हमारे जीवनों में पाप और मृत्यु द्वारा आई गड़बड़ी या अस्तव्यस्ता,के खिलाफ कार्यवाही करते हुए आगे बढ़ता है। राज्य के उद्घाटन, निरंतरता, और समापन या परिपूर्णता में, वह संसार को उसके आदर्श मंजिल के मार्ग पर स्थापित कर रहा है – अर्थात अपने लोगों के लिए एक अद्भुत नई सृष्टि।

निष्कर्ष

इस पाठ में हमने चार प्रमुख विचारों को देखा: उत्पत्ति 1-11 का व्यापक उद्देश्य, उत्पत्ति 1:1-2:3 की संरचना और वास्तविक अर्थ, और वे तरीके जिनमें नया नियम सृष्टि की कहानी के मूल विषयों को मसीह और हमारे जीवनों पर लागू करता है। मूसा लिखित सृष्टि के इतिहास को इस दृष्टिकोण से देखने पर वर्तमान में इसके बहुत गहरे निहितार्थ सामने आते हैं।

आज के समय में रहने वाले मसीहों के रूप में, हमें देखने की जरूरत है कि किस तरह से उत्पत्ति में मूसा के मूल उद्देश्य मसीह में हमारे जीवनों पर लागू होते हैं। उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों को पहली बार सुनने वाले इस्राएलियों के समान ही, हम लोग भी जब इस पापमय संसार में मसीह का पालन करते हैं तो आसानी से निराश हो जाते हैं। लेकिन जिस तरह मूसा ने अपने पाठकों को विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया था कि वे सही मार्ग पर चल रहे है जो उन्हें परमेश्वर केआदर्श संसार की ओर ले जा रहा है, उसी तरह हमें भी प्रोत्साहित होना चाहिए कि हम भी मसीह में हो कर परमेश्वर के अद्भुत मार्ग पर चलते हुए आदर्श संसार की और बढ़ रहे है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।